Hindi

Code No. 201

भूमिका

भाषा बहता नीर है, इस तथ्य से सभी परिचित हैं। जैसे-जैसे समय बदलता है, मनुष्य की आवश्यकताएँ बदलती हैं, उसी के साथ मनुष्य का व्यवहार बदलता है, विचारधारा बदलती है, भावनाएँ बदलती हैं। इन सभी के बदलाव से भाषा में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक ही है। नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्रता से हो रहे विकास के कारण आज सभी कुछ तेज़ी से बदल रहा है। हिंदी भाषा में ढेरों नए शब्द, पारिभाषिक शब्द और संकल्पनाओं का आगमन हुआ है। हिंदी भाषी सामान्य व्यक्ति नई सूचना-क्रांति के परिणामस्वरूप आए अनेक शब्दों का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में कर रहा है। इसके कारण साहित्य-लेखन में भी रचनाकारों की विचार-प्रक्रिया परिवर्तित हुई है। हिंदी भाषा भारत के जनतंत्र की आकांक्षाओं की पूर्ति करती है। इसी भाषा से देश के लोगों के बीच संपर्क स्थापित होता है। हिंदी भाषा का माध्यमिक स्तर का यह पाठ्यक्रम इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

औचित्य

यह जीवन और जगत की विभिन्न आवश्यकताओं में उपयोगी सिद्ध हो, इसी बात का ध्यान रखते हुए इसे अधिक व्यावहारिक, भाषा कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) आधारित और दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ बनाने का प्रयास किया गया है। हम जीवन में मौखिक भाषा का सर्वाधिक प्रयोग करते हैं, अतः इस पाठ्यक्रम में सुनना और बोलना कौशल पर विशेष बल दिया गया है। व्याकरण कहीं पाठ्यक्रम को अधिक बोझिल न बना दे, इसके लिए इसे पाठ-सामग्री में ही समाहित किया गया है। इस रूप में यह पाठ्यक्रम अधिक व्यावहारिक तथा अन्य पाठ्यक्रमों से भिन्न और उपयोगी है।

पूर्व अपेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पूर्व शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह:

- सामान्य स्तर की गद्य और काव्य रचनाएँ औसत गति से पढ़ सके;
- बोलने और लिखने में त्रुटिहीन वाक्य-संरचना का प्रयोग कर सके;
- सामान्य शब्दों की वर्तनी ठीक तरह से लिख सके;
- सामान्य भाषा में अपनी बात बोलकर या लिखकर अभिव्यक्त कर सके;
- हिंदी के लगभग 5000 शब्दों की पहचान कर सके और 3500 शब्दों का अपनी भाषा में प्रयोग कर सके।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य तथा विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं:

सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा कर लेने के बाद शिक्षार्थी

- भाषिक तत्त्वों तथा हिंदी के भाषिक कौशलों की क्षमता का विकास कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;
- हिंदी के माध्यम से अन्य विषयों के अध्ययन से विभिन्न विषयों का वर्णन कर सकेंगे;
- व्यावहारिक तथा व्यावसायिक संदर्भों में हिंदी का सटीक प्रयोग कर सकेंगे;
- साहित्य को पढ़कर उसका उल्लेख व समीक्षा कर सकेंगे;
- विभिन्न मानवीय मूल्यों तथा सद्पृ वृ त्तियोंका विश्लेषण कर सकेंगे;
- भारतीय सभ्यता और संस्कृति के गुण-दोषों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विभिन्न विषयों, संदर्भों और प्रसंगों पर स्वतंत्र रूप से चिंतन-मनन कर मौलिक रूप से अपनी बात प्रस्तुत कर सकेंगे;
- हिंदी में स्वतंत्र रूप से अपने भावों तथा विचारों को मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा कर लेने के बाद शिक्षार्थियों में भाषा के निम्नलिखित कौशलों का विकास होगाः

सुनना

- धैर्य और एकाग्रता के साथ सुनकर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे;
- सुनने के शिष्टाचार का पालन कर उसको प्रकट कर सकेंगे;
- श्रुत विचारों, तथ्यों तथा मुख्य बातों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- श्रुत भावों, विचारों और तथ्यों के बीच संबंध स्थापित कर तुलना कर सकेंगे;
- श्रुत विचारों, भावों के आधार पर निष्कर्ष निकाल कर प्रस्तुत कर सकेंगे;

बोलना

- अपनी बात को शुद्ध तथा बोधगम्य उच्चारण के साथ उचित यति-गति, बलाघात, अनुतान सहित बोल सकेंगे;

- विभिन्न सामाजिक संदर्भों में अपनी बात सहज ढंग से कह सकेंगे;
- अवसरानुकूल औपचारिक तथा अनौपचारिक (निकट, अति निकट) शिष्ट भाषा का प्रयोग कर सकेंगे;
- अपनी बातों को तर्कसहित प्रस्तुत कर सकेंगे;
- अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विभिन्न तथ्यों, विचारों और भावों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकेंगे।

पढ़ना

- विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री (गद्य तथा कविता) का वाचन उचित यति-गति से कर सकेंगे;
- अपठित सामग्री का द्रुतगति से वाचन कर सकेंगे तथा मौन वाचन की क्षमता का विकास कर सकेंगे;
- पठित सामग्री में निहित मुख्य विचारों, तथ्यों तथा घटनाओं की पहचान कर सकेंगे और उनके बीच तारतम्य स्थापित कर सकेंगे;
- पठित सामग्री में आए शब्दों, उक्तियों, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल भाव-ग्रहण कर उनका प्रयोग सकेंगे;
- पठित सामग्री का निष्कर्ष तथा सार निकाल सकेंगे;
- आवश्यकतानुसार शब्दकोश, संदर्भ कोश, विषय-सूची, अनुक्रमणिका आदि देखकर उनका प्रयोग कर सकेंगे।

लिखना

- मानक वर्तनी में शब्दों-वाक्यों का प्रयोग करते हुए अपनी बात लिख सकेंगे;
- विराम आदि चिह्नों का सही प्रयोग कर सकेंगे;
- व्यवहारोपयोगी तथा व्यवसायपरक शब्दों, मुहावरों, पदबंधों का उपयुक्त और प्रभावी प्रयोग कर सकेंगे;
- अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट और प्रभावी रूप में व्यक्त कर सकेंगे;
- सामग्री को सुसंबद्ध तथा क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे;
- सार-लेखन (समाचार-पत्र, पत्र आदि का) कर सकेंगे।

व्याकरण तथा व्यावहारिक भाषा-प्रयोग

- व्याकरण के उपयोगी बिंदुओं का बोध और प्रयोग कर सकेंगे;

- व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों- पत्र-पत्रिकाएँ आदि का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे;
- संप्रेषण की आधुनिक तकनीकों की भाषा का उचित प्रयोग सीख का प्रस्तुत सकेंगे;
- हिंदी की विविध भूमिकाओं, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा का उल्लेख कर सकेंगे;
- विविध क्षेत्रों में उपयोगी भाषा की अलग-अलग प्रयुक्तियों को सीखकर उनका प्रयोग कर सकेंगे।

क्षेत्र तथा रोजगार के अवसर

इस विषय में रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं जिनमे से कुछ इस प्रकार है:

1. विद्यालयी शिक्षण
2. महाविद्यालयी शिक्षण
3. विश्वविद्यालयी शिक्षण
4. पत्रकारिता
5. जनसंचार
6. अनुवाद
7. मीडिया इत्यादि

शैक्षणिक योग्यता

आयु: कम से कम 14 वर्ष

योग्यता: पढ़ने तथा लिखने का सामान्य ज्ञान

अध्ययन का माध्यम: हिंदी

अध्ययन योजना: सिद्धान्त तथा अनुशिक्षक मूल्यांकन पत्र।

मूल्यांकन योजना

सिद्धान्त: 100 अंक

अनुशिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र: सिद्धान्त का 20%

पाठ्यक्रम का परिचय

प्रस्तुत पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के चारों कौशलों:सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना पर अनुपात के अनुसार बल दिया गया है। व्याकरण तथा भाषा-प्रयोग चूँकि सभी कौशलों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए समान रूप से आवश्यक है, अतः संदर्भ के अनुसार उनका शिक्षण किया गया है तथा उनका मूल्यांकन भी होगा। भाषा-कौशल के द्वारा ही भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम का विवरण

सुनना समयः **10** घंटे

लक्ष्य: इस इकाई का उद्देश्य सुनकर भाषा का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना है।

इकाई: 1. हिंदी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण, बलाघात, स्वराघात, अनुतान सुनना।

2. वार्तालाप, भाषण, वक्तव्य, प्रश्न, तर्कसहित उत्तर सुनना।

बोलना समयः 10 घंटे

लक्ष्य: इस इकाई का उद्देश्य अपने विचार स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने और स्थिति के अनुरूप अपनी बात कहने के कौशल का विकास करना है।

इकाई: 1. हिंदी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण, बलाघात, स्वराघात, अनुतान के साथ बोलने का कौशल।

2. सामान्य स्थिति (औपचारिक तथा अनौपचारिक) में वार्तालाप, अपना परिचय देना, भाषा, वक्तव्य, प्रश्न करना, विचार रखना, तर्क (पक्ष तथा विपक्ष में) प्रस्तुत करना, संवाद में भूमिका निर्वाह, भाव के अनुकूल कविता का वाचन, कथन तथा विवरण, साक्षात्कार, मंच संचालन, कहानी-वाचन का कौशल विकसित करना।

पढ़ना अंकः 45 समयः 50 घंटे

लक्ष्य: इस इकाई का उद्देश्य मुद्रित तथा हस्तलिखित सामग्री का मुखर तथा मौन वाचन कर अर्थग्रहण की क्षमता का विकास करना है। जीवन में मुख्यतः भाषा के दो रूपों में सामग्री शिक्षार्थी के सामने आती है। पहला भाषा का काव्य-रूप तथा दूसरा-गद्य-रूप।

इकाई: कविता का पठन कविता के विविध रूपों से परिचय, केंद्रीय भाव, सराहना तथा काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ पाठ्यसामग्री में दी गई हैं।

कबीर, रहीम, वृंद, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, भवानी प्रसाद मिश्र, निर्मला पुतुल और बालचंद्रन चुल्लिक्काड।

बहु-प्रयुक्त छंद, अलंकार का संदर्भानुसार शिक्षण।

गद्य का पठन, गद्य की विविध विधाओं का परिचय, व्याख्या, शैलीगत विशेषताओं का परिचय कराते हुए शिक्षार्थियों को अपठित गद्य के पठन की ओर उन्मुख किया गया है।

कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, फीचर, निबंध, पत्रकारिता, विज्ञान-लेख के साथ-साथ व्याकरण तथा भाषा-प्रयोग के निर्धारित बिंदुओं का संदर्भानुसार शिक्षण।

लिखना अंकः 35 समयः 40 घंटे

लक्ष्य: इस इकाई का उद्देश्य शिक्षार्थियों को विविध प्रकार के लेखन-कौशल में सक्षम बनाना है, ताकि वे जीवन में आवश्यकता के अनुसार प्रयोजनपरक तथा अभिव्यक्तिपरक प्रभावी लेखन कर सकें।

लक्ष्य: प्रयोजनपरक

- समाचार-लेखन
- पत्र-लेखन (औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र)

  व्यावसायिक पत्र, संपादक के नाम पत्र
- अभिव्यक्तिपरक

  सार-लेखन

  निबंध-लेखन

व्याकरण तथा व्यावहारिक भाषा-प्रयोग: अंकः 20 समयः 20 घंटे

लक्ष्य: इस इकाई का उद्देश्य शिक्षार्थी को व्याकरण के विविध बिंदुओं का बोध कराना तथा उनका संदर्भ के अनुसार भाषिक प्रयोग कराना है, जिससे वे शुद्ध तथा उपयुक्त भाषा के प्रयोग में दक्षता प्राप्त कर सकें।

इकाई:

- विभिन्न रूपों में हिंदी भाषा की स्थिति- राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा।
- भाषा का मानक रूप, लिपि, वर्ण-व्यवस्था, विराम चिह्न आदि।
- शब्द-रचना- उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास।

शब्द प्रकार- तत्सम, तद्भव, देशज, आगत; पर्याय, विलोम, अनेकार्थक; अनेक शब्दों के लिए एक शब्द; रूप-आकार में एक समान शब्दों में अंतर।

- वाक्य-संरचना-कर्ता, कर्म, क्रिया, कारक; पदक्रम, अन्विति; सरल, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्य-संरचनाएँ।
- मुहावरे-लोकोक्तियाँ।
- छंद-दोहा, सवैया, पद तथा मुक्त छंद।
- अलंकार-अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, दृष्टांत, मानवीकरण।

पाठ विवरण

1.	बहादुर	(कहानी)	अमरकांत
2.	दोहे	(कविता)	कबीर, रहीम और वृंद
3.	गिल्लू	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा
4.	आह्वान	(कविता)	मैथिलीशरण गुप्त
5.	रोबर्ट नर्सिंग होम में	(रिपोर्ताज)	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
6.	भारत की ये बहादुर बेटियाँ	(फीचर)	
7.	आजादी	(कविता)	बालचंदन चुल्लिक्काड
8.	चंद्रगहना से लौटती बेर	(कविता)	केदारनाथ अग्रवाल
9.	अखबार की दुनिया	(गद्य)	
10.	पढ़ें कैसे	(गद्य)	
11.	सार कैसे लिखें	(लेखन)	
12.	इसे जगाओ	(कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र
13.	सुखी राजकुमार	(कहानी)	ऑस्कर वाइल्ड
14.	बूढ़ी पृथ्वी का दुख	(कविता)	निर्मला पुतुल
15.	अंधेर नगरी	(नाटक)	भारतेन्दु हरीशचंद्र
16.	अपना पराया	(वैज्ञानिक लेख)	हरसरन सिंह विशनोइ
17.	बीती विभावरी जाग री	(कविता)	जयशंकर प्रसाद

18.	नाखून क्यों बढ़ते हैं	(ललित निबंध)	हजारीप्रसाद द्विवेदी
19.	शतरंज के खिलाड़ी	(कहानी)	मुंशी प्रेमचंद
20.	उनको प्रणाम	(कविता)	नागार्जुन
21.	पत्र कैसे लिखें	(लेखन)	
22.	निबंध कैसे लिखें	(लेखन)	

मूल्यांकन-योजना

हिंदी भाषा के प्रस्तुत पाठ्यक्रम का मूल्यांकन इस प्रकार किया जाएगा:

1. बाह्य मूल्यांकन

   मुख्य (लिखित) परीक्षा 100

2. आंतरिक मूल्यांकन

   शिक्षक अंकित मूल्यांकन-पत्र – 20

परीक्षा केंद्र पर प्रत्येक शिक्षार्थी की 100 अंकों की लिखित परीक्षा, ली जाएगी।

शिक्षार्थी को एक शिक्षक अंकित मूल्यांकन-पत्र अध्ययन केंद्र से प्राप्त होंगे, उन्हें हल करके अध्ययन-केंद्र पर सुनिश्चित तिथि तक वापस करना होगा।

अंक-वितरण

इकाई		निर्धारित अंक	समयावधि
पठन-बोध:	गद्य	35	कुल पाठ 22 x 10 = 220 घंटे
पठन-बोध:	कविता	25	टीएमए = 20 घंटे
अपठित गद्य		05	कुल =240 घंटे
अपठित कविता		05	
लेखन कौशल		20	
व्याकरण तथा व्यावहारिक भाषा-प्रयोग		10	
कुल योग		100	